International Journal of Home Science 2018; 4(3): 211-212

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2018; 4(3): 211-212
© 2018 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 05-07-2018
Accepted: 06-08-2018

सीमा पाठक
श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलाजी एण्ड मेडिकल साइंस सिहौर, मध्य प्रदेश, भारत ।

नीलमा कुँवर
प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, राम कृष्ण धर्माथ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

Correspondence
सीमा पाठक
श्री सत्य साई यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलाजी एण्ड मेडिकल साइंस सिहौर, मध्य प्रदेश, भारत ।

किशोर एवं किशोरियों में सामाजिक परिपक्वता एवं व्यवसायिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

सीमा पाठक, नीलमा कुँवर

सारांश
किशोरावस्था विकास की वह अवस्था है जिसमें सभी प्रकार के परिवर्तन परिपक्वता की ओर अग्रेसित होते हैं। वास्तव में यह अवस्था व्यक्ति के निर्माण की अवस्था होती है। बालक के प्रौढ़ जीवन की रूपरेखा इसी अवस्था में बनकर तैयार हो जाती है। इस अवस्था में सभी प्रकार के परिवर्तन अधिक वेग के कारण व्यक्तित्व का सारा स्वरूप ही एकदम नया फ्लेवर लेने लगता है। शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक तथा अत्याधिक सभी दृष्टि से व्यक्ति किशोरावस्था में नयापन आ जाता है।

कूट शब्दः सामाजिक परिपक्वता, उपलब्धि अभिप्रेरणा

प्रस्तावना
जब कोई व्यक्ति स्वेक्षापूर्वक सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेता है, सामाजिक नियमों और प्रयासों के प्रति दृढ़ निष्ठा रखता है या बिना किसी मानसिक तनाव, द्वन्द्व अथवा असन्तोष के सामाजिक प्रतिबंधों में सीमित होकर आचरण करता है तो यह समझा जाता है कि उसके भीतर सामाजिक प्रौढ़ता विकसित हो चुकी है, ऐसे व्यक्ति सामाजिक अवसरों पर अपना समय, श्रम या धन व्यय करके भी संतुष्ट और प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। सामाजिक प्रौढ़ता के कारण ही व्यक्ति सरलतापूर्वक सामाजिक प्रयासों और प्रतिमानों को सहर्श स्वीकार कर पाता है और उत्तम सामाजिक समायोजन स्थापित कर सकने में सफल होता है। सामाजिक प्रौढ़ता को सामाजिक विकास की चरम सीमा और सर्वोच्च लक्षण समझा जाता है, परन्तु इस प्रकार की दृष्टि से एक व्यक्ति दूसरे से भिन्न हो सकता है, अन्तर्मुखी व्यक्तियों की अपेक्षा बर्हिमुखी व्यक्तियों में सामाजिक प्रौढ़ता अधिक मात्रा में पायी जाती है। इसलिए ऐसे व्यक्तियों के भीतर सामाजिक गुण अधिक सीमा तक विकसित हो पाते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य
1. अनुसूचित जनजाति के किशोरों एवं किशोरियों में सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

अध्ययन पद्धति
उक्त शोध कार्य हेतु उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिला में स्थित शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है। इन विद्यालयों में अध्ययनरत 75 किशोर एवं 75 किशोरियां अनुसूचित जाति से एवं 75 किशोर एवं 75 किशोरियां अनुसूचित जनजाति से चुनी गयीं इस प्रकार कुल 300 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति छात्र/छात्राओं पर यह अध्ययन किया गया है। सही आँकड़े प्राप्त करने के लिए सामाजिक परिपक्वता मापनी, उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण तथा छात्र अध्ययन व्यवहार मापनी का उपयोग किया गया है। सांख्यिकी विधियों – माध्य, मानक विचलन, काई वर्ग का उपयोग किया गया है।

परिणाम

सारिणी–1(अ): अनुसूचित जनजाति के किशोरों के शैक्षिक सफलता के लिए उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक परिणाम

चर	स्कूल	संख्या	माध्य	मानक विचलन	"जेड" का मान	"पी" का मान
शैक्षिक सफलता के लिए उपलब्धि अभिप्रेरणा	शासकीय	53	23.66	1.270	0.000	>0.01
	अशासकीय	22	23.68	1.249		

स्वतंत्रता के अंश – 73
0-05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0199
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0040

तालिका 1(ब): अनुसूचित जनजाति के किशोरियों के शैक्षिक सफलता के लिए उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक परिणाम

चर	स्कूल	संख्या	माध्य	मानक विचलन	''जेड'' का मान	''पी'' का मान
शैक्षिक सफलता के लिए उपलब्धि अभिप्रेरणा	शासकीय	55	25.13	2.396	0.290	>0.05
	अशासकीय	20	25.70	3.028		

स्वतंत्रता के अंश – 73
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0199
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0040

अनुसूचित जनजाति के किशोरों की शैक्षिक सफलता में माता–पिता का मुख्य योगदान होता है क्योंकि घर के पर्यावरण के कारक जैसे घर में प्रोत्साहन, उम्मीदों और शैक्षिक गतिविधियों के पारिवारिक स्तर परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित हैं। विभिन्न सामाजिक आर्थिक समूह के परिवार विभिन्न सीखने के माहौल पैदा करते हैं जो बच्चे की उपलब्धि प्रेरणा को प्रभावित करता है।

तालिका 2(अ): अनुसूचित जनजाति के किशोरों के व्यावसायिक उपलब्धि के लिए उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक परिणाम

चर	स्कूल	संख्या	माध्य	मानक विचलन	''जेड'' का मान	''पी'' का मान
व्यावसायिक उपलब्धि के लिए उपलब्धि अभिप्रेरणा	शासकीय	53	23.53	1.049	–0.542	>0.01
	अशासकीय	22	23.36	0.953		

स्वतंत्रता के अंश – 73
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0199
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0040

तालिका 2(ब): अनुसूचित जनजाति के किशोरियों के व्यावसायिक उपलब्धि के लिए उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक परिणाम

चर	स्कूल	संख्या	माध्य	मानक विचलन	''जेड'' का मान	''पी'' का मान
व्यावसायिक उपलब्धि के लिए उपलब्धि अभिप्रेरणा	शासकीय	55	23.35	1.430	–0.758	>0.05
	अशासकीय	20	24.20	2.707		

स्वतंत्रता के अंश – 73
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0199
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान – 0.0040

किशोरों के व्यवसायों और माताओं के व्यवसायों का उनके किशोर बच्चों की उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। किशोरावस्था के युवक जिनके पिता और माता दैनिक मजदूरी पर काम करते हैं, उनके निचले स्तर और उच्च स्तर के माता–पिता के व्यवसायों की तुलना में उपलब्धियों की प्रेरणा पर काफी कम स्कोर प्राप्त करते हैं। कामकाजी माताओं के समूह की तुलना में गैर–कामकाजी माताओं के समूह के पक्ष में एक महत्वपूर्ण उच्च शैक्षणिक उपलब्धि बच्चों को मिलती है इस प्रकार यह दूसरी परिकल्पना को अस्वीकार कर देता है जैसे माता–पिता (पिता और माता) व्यवसाय किशोरों की उपलब्धि प्रेरणा को प्रभावित नहीं करेगा। यह माना गया है कि माता–पिता की शिक्षा उनके किशोर बच्चों की उपलब्धि प्रेरणा पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है लेकिन अनुसूचित जनजाति के माता–पिता के साथ इसके विपरीत है। माता–पिता के व्यवसाय का उनके किशोर बच्चों की उपलब्धि प्रेरणा पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है क्योंकि माता–पिता के व्यवसाय से ही बच्चों का आर्थिक स्तर और समाज में उनका स्तर पहचाना जाता है। मगर अनुसूचित जनजाति के किशोर और किशोरियों के माता–पिता का व्यवसायिक स्तर भी सामान्य जाति के माता–पिता के स्तर के बराबर नहीं होता है।

निष्कर्ष

व्यवसायिक शिक्षा कई पहलुओं में सामान्य शिक्षा से अलग है, उनमें से कुछ अध्ययन की उच्च तीव्रता, अध्ययन के साथ नैदानिक कार्य करने की आवश्कता और अत्यधिक विशेष रूप से परिभाषित पथ का पालन करने की आवश्यकता है

सुझाव

1. किशोरावस्था में अंकुश तथा कठोर अनुशासन किशोर एवं किशोरियों को अधिक उग्र बना देता है। अतः अभिभावकों को किशोरों पर उचित निगरानी तथा अप्रत्यक्ष नियंत्रण रखना चाहिए, परन्तु अनुचित बंदिश या दबाव उनपर नहीं डालना चाहिए।
2. परिवार का आकार भी उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करता है जिन अभिभावकों की एकल संतान होती है तथा कामकाजी माता की होती है तब उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा दो व दो से अधिक संतान वाली गैर कामकाजी माता की किशोर बालिका की अपेक्षा उपलब्धि अभिप्रेरणा श्रेष्ठ होती है।
3. सामाजिक परिपक्वता के विकास में पारिवारिक वातावरण एवं परिवार के सदस्यों के मध्य अन्तः सह सम्बन्धों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अभिभावकों को किशोर–किशोरियों के सामाजिक परिपक्वता के उत्तम विकास हेतु सुखद एवं सौहाद्रपूर्ण वातावरण प्रदान करना चाहिए। जिससे उनमें अच्छी सामाजिकता का विकास हो सके।

संदर्भ

1. Chaudhary P. Gender and Locality in their relationship to social maturity of teens: A comparative analysis. Research Journal Licensed on the basis of work. 2014; 1(V).
2. Singh H, Singh M. Comparative Study of Social Maturity between non-sports women and sports women. Journal for Global Research Analysis. 2015; 4:6-10.